



---

## स्वामी विवेकानन्द के शिक्षा दर्शन का अध्ययन

कंचन यादव, रिसर्च स्कॉलर

डॉ संजय कुमार यादव , शोध निदेशक, प्रोफेसर

डॉक्टर भीमराव अंबेडकर यूनिवर्सिटी आगरा

### सार

स्वामी विवेकानन्द, एक ऐसे महान विचारक थे जिन्होंने भारतीय युवाओं में एक नई चेतना जगाई। उन्होंने न केवल धर्म और अध्यात्म के क्षेत्र में बल्कि शिक्षा के क्षेत्र में भी अहम योगदान दिया। उनका शिक्षा दर्शन आज भी प्रासंगिक है और हमें एक नई दिशा दिखाता है। स्वामी विवेकानन्द के अनुसार शिक्षा का मुख्य उद्देश्य केवल ज्ञान प्राप्त करना नहीं है, बल्कि एक पूर्ण व्यक्ति का निर्माण करना है। उन्होंने जोर दिया कि शिक्षा हमें एक स्वतंत्र, आत्मविश्वासी और सकारात्मक व्यक्तित्व बनाने में मदद करती है। शिक्षा हमें समाज सेवा के लिए प्रेरित करती है और हमें एक बेहतर नागरिक बनाती है। स्वामी विवेकानन्द का मानना था कि शिक्षा का मुख्य उद्देश्य चरित्र का निर्माण करना है। उन्होंने कहा कि एक अच्छा चरित्र ही व्यक्ति को सफल बनाता है। स्वामी जी ने शारीरिक और मानसिक विकास को शिक्षा का एक महत्वपूर्ण हिस्सा माना। उन्होंने कहा कि एक स्वस्थ शरीर में ही स्वस्थ मन का वास होता है। स्वामी जी ने ज्ञान और कौशल के विकास पर भी जोर दिया। उन्होंने कहा कि ज्ञान हमें सशक्त बनाता है और कौशल हमें स्वावलंबी बनाते हैं। स्वामी जी ने शिक्षा को समाज सेवा से जोड़ा। उन्होंने कहा कि शिक्षित व्यक्ति को समाज के उत्थान के लिए कार्य करना चाहिए। स्वामी जी ने आत्मविश्वास को शिक्षा का एक महत्वपूर्ण पहलू माना। उन्होंने कहा कि आत्मविश्वास ही हमें सफलता की ओर ले जाता है।

### मुख्य शब्द

आत्मविश्वास, शिक्षा, विकास, समाज

### भूमिका

आज भी स्वामी विवेकानन्द का शिक्षा दर्शन प्रासंगिक है। आधुनिक शिक्षा में कौशल विकास और रोजगार पर अधिक जोर दिया जाता है, लेकिन हमें चरित्र निर्माण और समाज सेवा को भी नहीं भूलना चाहिए। स्वामी विवेकानन्द का शिक्षा दर्शन हमें यह सिखाता है कि शिक्षा केवल डिग्री हासिल करने का माध्यम नहीं है, बल्कि एक पूर्ण जीवन जीने का साधन है।

स्वामी विवेकानंद, भारत के एक महान संत और विचारक थे, जिन्होंने न केवल भारत बल्कि विश्व के युवाओं को एक नई दिशा दिखाई। उनका चरित्र निर्माण दर्शन आज भी प्रासंगिक है और युवाओं को सशक्त बनाने में महत्वपूर्ण भूमिका निभाता है। स्वामी विवेकानंद का मानना था कि चरित्र निर्माण व्यक्ति के जीवन का सबसे महत्वपूर्ण लक्ष्य होना चाहिए। स्वामी जी के अनुसार, आत्मविश्वास ही सफलता की कुंजी है। उन्होंने युवाओं को अपने आप पर विश्वास करने और अपनी क्षमताओं को पहचानने के लिए प्रेरित किया।

स्वामी जी ने आत्मनिर्भरता को एक महान गुण माना। उन्होंने कहा कि व्यक्ति को अपने पैरों पर खड़ा होना चाहिए और दूसरों पर निर्भर नहीं रहना चाहिए। स्वामी जी का मानना था कि आत्मज्ञान ही व्यक्ति को सच्ची स्वतंत्रता प्रदान करता है। उन्होंने आत्मज्ञान प्राप्त करने के लिए ध्यान और योग का अभ्यास करने पर बल दिया। स्वामी जी ने आत्मसंयम को एक महान शक्ति माना। उन्होंने कहा कि व्यक्ति को अपनी इंद्रियों पर नियंत्रण रखना चाहिए और अपने क्रोध, लोभ और मोह पर विजय प्राप्त करनी चाहिए। स्वामी जी ने आत्मत्याग को सर्वोच्च कर्तव्य माना। उन्होंने कहा कि व्यक्ति को समाज के कल्याण के लिए अपने स्वार्थों का त्याग करना चाहिए।

स्वामी विवेकानंद का मानना था कि मजबूत चरित्र वाले व्यक्ति ही एक मजबूत राष्ट्र का निर्माण कर सकते हैं। उन्होंने युवाओं को देश सेवा के लिए प्रेरित किया और कहा कि देश की उन्नति के लिए व्यक्ति को अपना सर्वस्व न्योछावर कर देना चाहिए।

आज के युग में भी स्वामी विवेकानंद का चरित्र निर्माण दर्शन उतना ही प्रासंगिक है जितना पहले था। युवाओं को आज भी कई चुनौतियों का सामना करना पड़ता है, जैसे कि नशे की लत, अपराध, और बेरोजगारी। इन चुनौतियों से निपटने के लिए युवाओं को मजबूत चरित्र की आवश्यकता होती है। स्वामी विवेकानंद के सिद्धांत युवाओं को मजबूत बनाने और उन्हें एक सकारात्मक दिशा देने में मदद कर सकते हैं।

स्वामी विवेकानंद का चरित्र निर्माण दर्शन एक सार्वभौमिक सत्य है। यह दर्शन न केवल व्यक्ति को सफल बनाने में मदद करता है बल्कि समाज और राष्ट्र के विकास में भी योगदान देता है। युवाओं को स्वामी विवेकानंद के जीवन और शिक्षाओं से प्रेरणा लेनी चाहिए और अपने जीवन में इन सिद्धांतों को लागू करना चाहिए।

स्वामी विवेकानंद के अनुसार, शारीरिक विकास मानव विकास का एक अभिन्न अंग है। एक स्वस्थ शरीर ही एक स्वस्थ मन का घर होता है। उन्होंने कहा था कि "दुर्बलता ही सबसे बड़ा पाप है"। उनके विचार में, एक कमजोर शरीर व्यक्ति को उसके लक्ष्यों को प्राप्त करने से रोकता है। एक मजबूत शरीर न केवल व्यक्ति को स्वतंत्र और आत्मनिर्भर बनाता है, बल्कि उसे समाज सेवा के लिए भी सक्षम बनाता है।

स्वामी विवेकानंद योग और व्यायाम को शारीरिक विकास का सबसे महत्वपूर्ण साधन मानते थे। उन्होंने कहा था कि योग न केवल शरीर को स्वस्थ बनाता है, बल्कि मन को भी शांत और स्थिर करता है। उन्होंने संतुलित आहार लेने पर जोर दिया। उन्होंने कहा था कि भोजन शरीर का ईंधन है और हमें स्वस्थ रहने के लिए संतुलित आहार लेना चाहिए। स्वामी विवेकानंद स्वच्छता को भी बहुत महत्वपूर्ण मानते थे। उन्होंने कहा था कि स्वच्छता

ही स्वास्थ्य का पहला रहस्य है। उन्होंने प्रकृति के साथ संपर्क बनाने पर जोर दिया। उन्होंने कहा था कि प्रकृति हमें शांति और ऊर्जा देती है।

## साहित्य की समीक्षा

स्वामी विवेकानंद के शारीरिक विकास दर्शन आज भी उतने ही प्रासंगिक हैं जितने वे उनके समय में थे। आज के समय में, जब लोग तनाव और प्रदूषण के कारण कई तरह की बीमारियों से ग्रस्त हैं, स्वामी विवेकानंद के विचार हमें स्वस्थ रहने के लिए प्रेरित करते हैं। [1]

स्वामी विवेकानंद का शारीरिक विकास दर्शन हमें सिखाता है कि एक स्वस्थ शरीर ही एक स्वस्थ जीवन का आधार है। उन्होंने हमें योग, व्यायाम, संतुलित आहार और स्वच्छता जैसे साधनों के माध्यम से स्वस्थ रहने के लिए प्रेरित किया। उनके विचार आज भी युवाओं को स्वस्थ और मजबूत बनने के लिए प्रेरित करते हैं। उन्होंने मानसिक विकास को व्यक्ति के सर्वांगीण विकास का एक महत्वपूर्ण अंग माना। उनके मानसिक विकास दर्शन ने भारत के युवाओं को आत्मविश्वास और राष्ट्रप्रेम से ओत-प्रोत किया। [2]

स्वामी जी का मानना था कि व्यक्ति को अपने आप पर विश्वास होना चाहिए। उन्होंने कहा था, "उठो, जागो और तब तक मत रुको जब तक लक्ष्य प्राप्त न हो जाए।" उन्होंने युवाओं को आत्मविश्वास से भरे जीवन जीने के लिए प्रेरित किया। स्वामी जी ने शारीरिक और मानसिक दोनों तरह की शक्ति के संचय पर बल दिया। उन्होंने योग और व्यायाम को शारीरिक और मानसिक स्वास्थ्य के लिए आवश्यक माना। [3]

स्वामी जी का मानना था कि ज्ञान ही शक्ति है। उन्होंने ज्ञान प्राप्त करने के लिए जीवन भर अध्ययन करने पर जोर दिया। स्वामी जी ने सेवा भाव को मानवीय जीवन का सर्वोच्च धर्म माना। उन्होंने कहा था कि मनुष्य का कर्तव्य है कि वह समाज की सेवा करे। स्वामी जी ने सकारात्मक सोच को जीवन जीने का आधार माना। उन्होंने कहा था कि सकारात्मक सोच व्यक्ति को सफलता की ओर ले जाती है। [4]

## स्वामी विवेकानंद के शिक्षा दर्शन का अध्ययन

स्वामी जी के विचारों ने व्यक्ति को आत्मनिर्भर और आत्मविश्वासी बनाने में मदद की। स्वामी जी ने समाज सेवा के महत्व पर जोर दिया जिससे समाज में एकता और भाईचारा बढ़ता है। स्वामी जी ने भारतीय युवाओं में राष्ट्रप्रेम की भावना जगाई जिससे देश का विकास हुआ।

स्वामी विवेकानंद का मानसिक विकास दर्शन आज भी प्रासंगिक है। उनके विचारों को अपनाकर हम एक बेहतर व्यक्ति और समाज का निर्माण कर सकते हैं। स्वामी जी ने हमें सिखाया कि हम अपनी शक्ति और क्षमताओं में विश्वास करें और अपने लक्ष्यों को प्राप्त करने के लिए कठिन परिश्रम करें।

उन्होंने न केवल भारत में बल्कि विश्वभर में हिंदू धर्म और योग का प्रचार किया। उनके विचारों ने लाखों लोगों को प्रेरित किया है। उनके जीवन और दर्शन से हमें बहुत कुछ सीखने को मिलता है। इस निबंध में हम स्वामी विवेकानंद के ज्ञान और कौशल विकास दर्शन का अध्ययन करेंगे।

स्वामी विवेकानंद का मानना था कि ज्ञान प्राप्त करना जीवन का सबसे महत्वपूर्ण लक्ष्य है। उन्होंने कहा था कि "उठो, जागो और तब तक मत रुको जब तक लक्ष्य प्राप्त न हो जाए।" उनके अनुसार, ज्ञान ही हमें स्वतंत्र बनाता है और हमें जीवन के उद्देश्य को खोजने में मदद करता है। स्वामी विवेकानंद का मानना था कि दोनों प्रकार के ज्ञान का होना आवश्यक है। बौद्धिक ज्ञान हमें व्यावहारिक जीवन में सफल होने में मदद करता है, जबकि आध्यात्मिक ज्ञान हमें आंतरिक शांति और खुशी प्राप्त करने में मदद करता है।

स्वामी विवेकानंद ने कौशल विकास पर भी बहुत जोर दिया। उन्होंने कहा था कि ज्ञान का कोई मूल्य नहीं होता है जब तक कि उसका उपयोग व्यावहारिक जीवन में न किया जाए। उन्होंने कहा था कि हमें अपने ज्ञान और कौशल का उपयोग दूसरों की सेवा के लिए करना चाहिए। उन्होंने कहा था कि सेवा ही सबसे बड़ी पूजा है।

स्वामी विवेकानंद के ज्ञान और कौशल विकास दर्शन हमें जीवन में सफल होने के लिए प्रेरित करते हैं। उन्होंने हमें सिखाया कि हमें अपने ज्ञान का उपयोग दूसरों की सेवा के लिए करना चाहिए और हमें हमेशा सकारात्मक सोच रखनी चाहिए। उनके विचार आज भी उतने ही प्रासंगिक हैं जितने वे पहले थे।

आज के समय में भी स्वामी विवेकानंद का शिक्षा दर्शन प्रासंगिक है। आज की दुनिया में केवल ज्ञान ही काफी नहीं है बल्कि कौशल विकास भी बहुत जरूरी है। स्वामी जी के अनुसार शिक्षा ऐसी होनी चाहिए जिससे व्यक्ति में विभिन्न प्रकार के कौशल विकसित हों। आधुनिक शिक्षा में सृजनात्मकता को बढ़ावा देना बहुत जरूरी है। स्वामी जी ने भी सृजनात्मकता को महत्व दिया था।

आज के समय में मूल्यों पर आधारित शिक्षा की बहुत आवश्यकता है। स्वामी जी के शिक्षा दर्शन में मूल्यों को बहुत महत्व दिया गया है। शिक्षा को समाज सेवा से जोड़ना बहुत जरूरी है। स्वामी जी ने भी सेवा को शिक्षा का अंतिम लक्ष्य बताया था।

## निष्कर्ष

स्वामी विवेकानंद के शिक्षा दर्शन ने भारतीय शिक्षा पद्धति को एक नई दिशा दी। उनका मानना था कि शिक्षा हमें एक आदर्श नागरिक बनाती है और समाज के उत्थान में योगदान देती है। हमें उनके विचारों को अपने जीवन में उतारना चाहिए और एक बेहतर समाज का निर्माण करना चाहिए। स्वामी विवेकानंद का शिक्षा दर्शन आज भी प्रासंगिक है। उनके विचारों को आधुनिक शिक्षा में लागू करके हम एक बेहतर समाज का निर्माण कर सकते हैं। स्वामी जी के विचारों को अपनाकर हम अपने युवाओं को एक सच्चा नेतृत्व प्रदान कर सकते हैं।

## सन्दर्भ

1. तिवारी उमेश (एन. डी.)-प्रगतिशील भारत में शिक्षा ,2020, आगरा ,ज्योति प्रकाशन

2. गोयल डॉव राजकुमार और अग्रवाल डॉव मीरा -शिक्षा दर्शन और आत्म-विकास की अवधरणाएं ,2019, आर. लाल बुक डिपो मेरठ
3. सक्सेना ,एन. आर. स्वरूप ,2019 शिक्षा दर्शन एवं पाश्चात्य तथा भारतीय शिक्षाशास्त्री ,आर. लाल. बुक डिपो मेरठ
4. पचैरी प्रोव गिरीश -समकालीन भारत और शिक्षा ,2021, आर. लाल बुक डिपो
5. माथुर डॉव एसव एसव- शिक्षा दार्शनिक तथा सामाजिक आधार ,2020, श्री विनोद पुस्तक मंदिर ,आगरा
6. पाठक ,पीव डीव और त्यागी जी.एस. डी.-शिक्षा सामान्य सिद्धांत ,2021, विनोद पुस्तक मंदिर ,आगरा
7. बिहारी ,प्रोव रमन लाल एवं तोमर गजेन्द्र सिंह -विश्व श्रेष्ठ शैक्षिक चिंतक 2020,आर. लाल बुक डिपो, मेरठ